IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

Impact Factor: 5.731

Volume 2, Issue 1, February 2021

आदिवासी विमर्श और निर्मला पुतुल की कविताएं

डॉ० लालजीत राम

असिस्टेंट प्रोफेसर -हिन्दी

पं० रामलखन शुक्ल राजकीय स्नातकोत्तर

महाविद्यालय आलापुर, अम्बेडकर नगर, उ०प्र०

शोध सारांशः- आदिवासी साहित्य मुख्यधारा के विमर्श से अलग, जल-जंगल-जमीन और आदिवासी अस्मिता की आवाज़ है। यह साहित्य सदियों के शोषण, विस्थापन और सांस्कृतिक अतिक्रमण के विरुद्ध प्रतिरोध दर्ज करता है। प्रकृति यहाँ केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन और देवी है। इसी धारा की सशक्त कवयित्री हैं निर्मला पुतुल। झारखंड की संथाल जनजाति से आने वाली निर्मला पुतुल आदिवासी स्त्री-स्वर की सबसे प्रामाणिक आवाज़ मानी जाती हैं। इनकी कविताएँ हिंदी में हैं, पर इनकी संवेदना पूरी तरह संथाली है। पहला संग्रह 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' 2004 में आया और इन्हें पहचान दिलाई।

निर्मला पुतुल की कविता में आदिवासी स्त्री का दोहरा संघर्ष दिखता है – एक बाहर के समाज से और दूसरा अपने ही समाज के पितृसत्ता से। 'अपने घर की तलाश' कविता में वे लिखती हैं कि आदिवासी स्त्री के लिए घर भी सुरक्षित नहीं। 'उतना ही लो थाली में' जैसी कविताएँ संथाल दर्शन 'खाने के लिए जियो, जीने के लिए मत खाओ' को सामने रखती हैं। यह पूँजीवादी उपभोग के विरुद्ध सीधी चेतावनी है।

निर्मला पुतुल की भाषा सहज है पर मारक है। वे शहरी बुद्धिजीवियों के 'आदिवासी रोमांस' को तोड़ती हैं और बताती हैं कि असली आदिवासी जीवन संघर्ष, विस्थापन और पहचान के संकट से भरा है। उनकी कविता 'रिपोर्ट' नहीं, 'आत्म-कथ्य' है। इस तरह निर्मला पुतुल आदिवासी साहित्य को स्त्री-दृष्टि और जमीनी यथार्थ से समृद्ध करती हैं।

मूल शब्दः- सर्वहारा, अस्मिता, उद्घोष, विद्रूपता, विडंबना, पितृसता, सम्भ्रांत, जिस्मानी।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in